study time
Page No.:
Date : / /

## वैदिक काल की शिक्षा की प्रमुख विशेषताएँ (Main Characteristics of Vedic Education) →

1- **शिक्षा का प्रारम्भ उचित समय पर →** शिक्षा का आरम्भ पाँच वर्ष की आयु में शुरू करना चाहिए। ग्रन्थों में उल्लेख मिलता है कि शिक्षा का आरम्भ बाल्यावस्था से होना चाहिए, इस समय मस्तिष्क लचीला, स्मृति तीव्र तथा बुद्धि ग्रहणशील रहती है।

2- **गुरुकुल →** भारतीय संस्कृति का निर्माण नगरों में नहीं बल्कि आश्रमों में हुआ। उपनयन संस्कार के बाद बालक गुरुकुल में शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेज दिया जाता था और वह 'गुरुकुलवासी' कहलाता था। ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करते हुए अध्ययन तथा गुरु सेवा कार्य में अपने को संलग्न रखते थे। बालक गुरुकुल में गुरु के गुणों का अनुकरण करता था।

3- **गुरु-शिष्य सम्बंध →** प्राचीन भारत का गुरु-शिष्य सम्बंध पिता-पुत्र तुल्य था। गुरु अपने छात्रों से अपार प्रेम रखते थे। वे उनका पुत्रवत ही लालन-पालन किया करते थे। शिष्य गुरु को पिता से बढ़कर मानते थे।

Scanned with CamScanner

4- शिक्षा में धार्मिक तत्व की प्रधानता → गुरु अपने शिष्यों को प्रार्थना करना, वेद मंत्रों का उच्चारण करना विधिवत बताते थे, यह धार्मिक शिक्षा छात्रों में दया, सेवा, सहिष्णुता, समता, आदर आदि नैतिक गुणों का विकास करती थी।

5- चरित्र निर्माण पर बल → 'अच्छी आदतों का पुंज ही चरित्र है' का निर्माण करने के लिए आदतों का विकास करना आवश्यक है। बालक का भावी जीवन भी आदतों पर ही आधारित है। गुरु अपने शिष्य में निम्न आदतें डालता था। (1) ब्रह्ममुहूर्त में जागना (2) प्रतिदिन पूजा करना (3) सर्वदा सत्य बोलना (4) सादा जीवन व्यतीत करना (5) सबसे प्रेम करना आदि।

6- सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास → गुरु अपने शिष्यों में ऐसे गुण उत्पन्न करते थे जिससे वे देश के भावी कर्णधार बने। विद्यार्थियों में इन्द्रिय-निग्रह, आत्म-संयम तथा आत्मविश्वास की भावना उत्पन्न की जाती थी।

Scanned with CamScanner

7- स्त्री शिक्षा का प्रचार → प्राचीन भारत में प्राय: घरों पर ही शिक्षा दी जाती थी। उन्हें बाहर नहीं भेजा जाता था। स्त्रियों को पुरुषों की भाँति ही वेदों के अध्ययन करने का अधिकार था।

8- सबको शिक्षा-प्राप्ति का अवसर → प्राचीन भारत में समाज को उन्नति के शिखर पर पहुँचाने वाली एक मात्र आधार-शिला शिक्षा ही है इसलिए प्राचीन काल में सबको शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया गया था।

9- गुरु का आदर्श सर्वोच्च → प्राचीन काल में गुरु ज्ञान व आध्यात्मिक पद्धति की दृष्टि से समाज में सर्वोच्च व्यक्ति थे तथा उनमें अग्नि की सी तेजस्विता तथा इन्द्र की सी वीरता थी। अत: स्वाभाविक ही उन्हें लोकप्रियता प्राप्त थी।

10- शिक्षा में पूर्णता → वैदिक काल में विभिन्न विषयों का सामान्य ज्ञान न देकर शिक्षा द्वारा व्यक्ति में एक विषय के ज्ञान की पूर्णता लाने का ध्येय तत्कालीन गुरुजनों के सम्मुख रहता था।

Scanned with CamScanner

11- विस्तृत विषय व साहित्य → वैदिक कालीन विद्यार्थियों को ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद व अथर्ववेद आदि चारों संहिताओं के मंत्रों को कण्ठस्थ करना पड़ता था और साथ ही शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छंद व तर्क विज्ञान आदि विषयों का भी अध्ययन करना पड़ता था।

12- समावर्तन संस्कार → ब्रह्मचारी जब अपना अध्ययन समाप्त कर लेता था तो समावर्तन संस्कार किया जाता था जिसे आजकल दीक्षान्त कहते हैं। इस अवसर पर गुरु के समक्ष ब्रह्मचारी को प्रतिज्ञा करनी पड़ती थी कि वह गुरु द्वारा दिये गये उपदेशों का पालन करेगा तथा अपने चरित्र को ऊँचा करने का प्रयत्न करेगा।

Scanned with CamScanner